SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय हिंदी फिल्मों में मीडिया की छवि : एक अध्ययन

सुनील दीपक घोडके, (Ph.D.), मीडिया अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुनील दीपक घोडके, (Ph.D.),
मीडिया अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय,
मोतिहारी, बिहार,, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 31/10/2020
Plagiarism : 00% on 24/10/2020

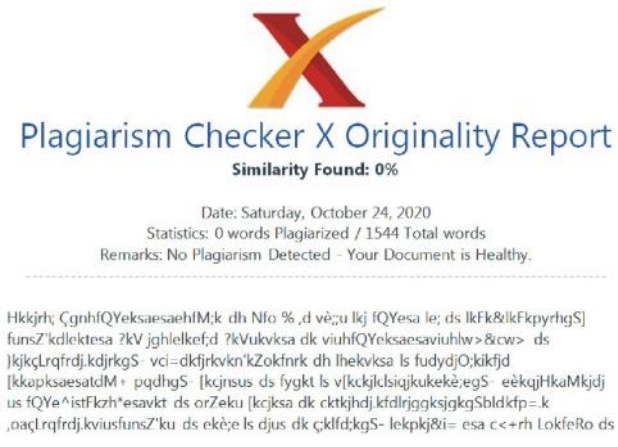
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Saturday, October 24, 2020
Statistics: 0 words Plagiarized / 1544 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

Hkkjrh; ÇgnhfQYeksaesaehfM;k dh Nfo % ,d vè;;u lkj fQYesa le; ds lkFk&lkFkpyrhgS] funsZ'kdlektesa ?kV jghlelkef;d ?kVukvksa dk viuhfQYeksaesaviuhlw>&cw> ds }kjkçLrqfrdj.kdjrkgS· vci=dkfjrkvkn'kZokfnrk dh lhekvksa ls fudydjO;kikfjd [kkapksaesatdM+ pqdhgS· [kcjnsus ds fygkt ls v[kckjklsiqjkukekè;egS· eèkqjHkaMkjdj us fQYe^istFkzh*esavkt ds orZeku [kcjksa dk cktkjhdj.kfdlrjggksjgkgSbldkfp=.k ,oaçLrqfrdj.kviusfunsZ'ku ds ekè;e ls djus dk çklfd;kgS- lekpkj&i= esa c<+rh lokfeRo ds

शोध सार

फिल्में समय के साथ–साथ चलती है, निर्देशक समाज में घट रही समसामयिक घटनाओं का अपनी फिल्मों में अपनी सूझ–बूझ के द्वारा प्रस्तुतिकरण करता है। अब पत्रकारिता आदर्शवादिता की सीमाओं से निकलकर व्यापारिक खांचों में जकड़ चुकी है। खबर देने के लिहाज से अखबार सबसे पुराना माध्यम है। मधुर भंडारकर ने फिल्म 'पेजथ्री' में आज के वर्तमान खबरों का बाजारीकरण किस तरह हो रहा है, इसका चित्रण एवं प्रस्तुतिकरण अपने निर्देशन के माध्यम से करने का प्रयास किया है। समाचार–पत्र में बढ़ती स्वामित्व के बढ़ते वर्चस्व के जैसे ही समाचार चैनल (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) का हाल है? इसे हम फिल्म 'मिशन इस्तानबुल' और 'रण' के माध्यम से देख सकते है।

मुख्य शब्द

सॉफ्टन्यूज़, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, टी.आर.पी. और ग्राफिक्स।

प्रस्तावना

सिनेमा समाज को एक दिशा देने का कार्य करता है। इस माध्यम में इतनी शक्ति है कि दुनिया का सबसे बड़ा नरसंहार एडोल्फ हिटलर भी इस माध्यम से डर गया था। चार्ली चैप्लिन को फिल्मों द्वारा यथा स्थिति को दर्शाने के कारण अपने देश को छोड़कर पराए देश में शरण लेनी पड़ी थी। फिल्में समय के साथ–साथ समाज और संस्कृति को लेकर चलती है तथा समाज को आईना दिखाने का कार्य करती है। फिल्म निर्देशक फिल्मों द्वारा समाज में चल रही यथास्थिति को दर्शाने का कार्य करता है। फिल्में समय के साथ–साथ चलती है, जिसे निर्देशक समाज में घट रही समसामयिक घटनाओं का अपनी फिल्मों में अपनी सूझ–बूझ के द्वारा प्रस्तुतिकरण करता है। उदाहरण स्वरूप हम कुछेक फिल्मों को देख सकते

हैं जिसमें 1936 में बनी फिल्म अछूत कन्या (फ्रैंज ऑस्टन) इसमें एक रेलवे क्रॉसिंग के गार्ड की लड़की, जो अछूत भी है, उसका प्रेम एक उच्चवर्गीय ब्राह्मण के बेटे से उस जमाने में जिस गहराई के साथ चित्रित किया गया था, उसकी प्रतिध्वनियां आज भी शेष है। 'अछूतकन्या' में छुआछूत के मानवीय कृत्य को बड़ी तीक्ष्णता से उकेरकर उसकी भर्त्सना की गई थी। यह उस समय आसान बात नहीं थी। यह बीसवीं सदी का पूर्वार्ध था और राष्ट्र इस समस्या से गहराई तक ग्रस्त था। इसी तरह 1946 में निर्मित 'धरती के लाल' बंगाल के अकाल के पृष्ठभूमि पर आधारित है। ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित यह पहली फिल्म अकाल और युद्ध की विभीषिका के बीच कृषकों की दुर्दशा और उनके पलायन के दर्द को बयान करती है। लेकिन अंत में वे पुनः वापस लौटते हैं और प्राकृतिक आपदाओं से मुक्तिमार्ग खोजते हुए सामूहिक कृषि का विकल्प तलाशते हैं। अब हम उन मीडिया आधारित फिल्मों को देखेंगे, जो कि स्वतंत्र भारत में निर्मित हुई है। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'न्यू देहली टाइम्स', 1995 में निदेशक रमेश शर्मा द्वारा निर्मित है, यह फिल्म अरुण शौरी द्वारा महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री ए.आर. अंतुले के अपराधिक गठजोड़ के खुलासे पर आधारित थी। इस फिल्म में यह स्पष्ट किया गया है कि अब पत्रकारिता आदर्शवादिता की सीमाओं से निकलकर व्यापारिक खांचों में जकड़ चुकी है। इस भ्रष्ट व्यवस्था में ईमानदार पत्रकार के लिए कोई जगह नहीं है। इसलिए 'न्यू देहली टाइम्स' के संपादक उसके वृद्ध मालिक के साथ तालमेल बैठा लेता है, लेकिन उसके बेटे के साथ उसकी पटरी नहीं बैठती। वह अखबार को शुद्ध व्यापार की तरह देखता है। राजनीतिक उठापटक के दौरान जब संपादक अपना कर्तव्य निभाता है और सच्चाई का साथ देता है तो वह पाता है कि जिस राजनीतिज्ञ के लिए उसने खतरा मोल लिया था, वह खुद ही मुख्यमंत्री के साथ समझौता कर चुका है और जिसे हत्या का मुजरिम होना चाहिए, उसे मंत्री पद से नवाजा गया है।

अतः प्रस्तुत शोधपत्र में मुख्यतः तीन मीडिया आधारित हिंदी फिल्मों का विश्लेषनात्मक अध्ययन करते हुए भारतीय हिंदी फिल्मों में मीडिया की छवि पर प्रकाश डाला है, जो निम्नवत् हैः

क्र.	फिल्म का नाम	वर्ष	निर्देशक	कलाकार	समयावधि
1.	पेजश्री	2005	मधुर भंडारकर	कोंकणा सेन शर्मा, अतुल कुलकर्णी, बोमन ईरानी, संध्या मृदुल और उपेंद्र लिमिया	2 घंटे 17 मिनट
2.	मिशन इस्तनबुल	2006	अपूर्वा लाखिया	जायद खान, सुनील शेट्टी, श्रेया सरन, विवेक ओबरॉय, शब्बीर आहूलवालिया, निकिता निधर और श्वेता भारद्वाज.	2 घंटे 20 मिनट
3.	रण	2010	रामगोपाल वर्मा	अमिताभ बच्चन, परेश रावल, रितेश देशमुख, मोहनीश बहल, सुदीप, गुल पनाग, नीतू चंद्रा और राजपाल यादव.	2 घंटे 11 मिनट

उद्देश्य

1. भारतीय हिंदी सिनेमा में मीडिया की छवि के फिल्मांकन का अध्ययन करना।
2. हिंदी सिनेमा द्वारा मीडिया के छवि निरूपण के स्वरूप का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

यह शोध विश्लेषणात्मक है। शोध अध्ययन में अवलोकन विधि तथा अंर्तवस्तु विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया है। शोध को व्यवस्थित रूप प्रदान करने हेतु कुछ मानदंडो को अपनाया गया है।

अवलोकन

अवलोकन प्रविधि से अपने विषय की विभिन्न घटनाओं को देखना कि किस प्रकार भारतीय सिनेमा में छवि

निर्माण हावी है। भारतीय सिनेमा तथा छवि निर्माण का अंतर संबंध है और वह किस प्रकार कार्य कर रहा है? इस प्रविधि में तथ्यों के संकलन हेतु अध्ययन का दृष्टिकोण तटस्थ व निष्पक्ष होता है। साथ ही इस प्रविधि के माध्यम से विभिन्न डायस्पोरिक सिनेमा की विषयवस्तु को देखना, फिर उसका विश्लेषण करना।

अंर्तवस्तु विश्लेषण

इस प्रविधि के माध्यम से भारतीय फिल्मों की सामग्री का भाषा, चित्र आदि संस्कारों को ध्यान में रखकर विश्लेषण किया गया है। इससे शोध विषय में चयनित फिल्मों की प्रासंगिकता का भी अध्ययन आंकड़ों के अनुरूप अध्ययन किया गया है।

अतः इन विधियों के प्रयोग से हिंदी सिनेमा की आंतरिक और बाह्य परिदृश्य का खाका आसानी से प्राप्त हो सकता है, जिसमें सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव के विश्लेषण के साथ आने वाले भविष्य की संकल्पना शामिल है।

विश्लेषण

अखबारी खबरें

खबर देने के लिहाज से अखबार सबसे पुराना माध्यम है। मधुर भंडारकर ने फिल्म 'पेजथ्री' में आज के वर्तमान खबरों का बाजारीकरण कैसे हो रहा है, इसका चित्रण एवं प्रस्तुतिकरण अपने निर्देशन द्वारा करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में पेजथ्री फिल्म का विश्लेषण किया जा रहा है। जिसमें हल्की–फुल्की ख़बरों (सॉफ्ट न्यूज़) को उत्पादन की तरह समाचार–पत्रों ने बेचना शुरू किया है। इसकी शुरुआत 90 के दशक में भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था की शुरुआत माना जाने लगा है। इस फिल्म में अंग्रेजी भाषाई समाचार–पत्र 'नेशनटुडे' के पेजथ्री संभान की पत्रकार माधवी शर्मा (कोंकणा सेन) जो मुंबई में रहकर काम करती है। यह इस फिल्म की मुख्य कलाकार है, जो इस चरित्र की छान–बीन करेंगी। उस समय संपादक के कहे अनुसार समाचार–पत्रों की सामग्री पेपर में छपती थी। स्वतंत्रता के बाद भी हम समाचार–पत्रों में इस तरह की सामग्री सन् 1975 के आपातकाल के समय तक देख सकते हैं। लेकिन सन् 1975 के बाद यह प्रचलन खत्म होकर समाचार–पत्र के स्वामी के कहे अनुसार समाचार–पत्रों की सामग्री पेपर में प्रकाशित होने लगी हैं। वस्तुतः समाचार–पत्र चलाने वाले अब या तो राजनेता होते हैं या उद्योगपति, जो अपने विभिन्न उद्योग–धंधों के लिए समाचार–पत्र का या न्यूज़ चैनलों का सुरक्षा कवच खड़ा करते हैं। हम इसका उदाहरण 'पेजथ्री' फिल्म में देख सकते हैं कि किस तरह से माधवी शर्मा पुलिस इंस्पेक्टर भोसले के साथ जाकर उस खबर का पर्दाफाश करती है, जिसमें छोटे–छोटे बच्चों का लैंगिक शोषण भारतीय अभिजात वर्ग के लोगों को अपने अंग्रेजी मित्र के साथ करते हुए पकड़ती है। उक्त न्यूज़ के सभी पुख्ता एवं ठोस सबूत होने के बावजूद भी वह खबर समाचार–पत्र में प्रकाशित नहीं होती, क्योंकि समाचार–पत्र का मालिक एक उद्योगपति है एवं रोमेशथा पर नामक व्यक्ति इस गिरोह में शामिल है। यह व्यक्ति समाचार–पत्र को विज्ञापन देता है, इस कारणवश यह न्यूज़ समाचार–पत्र के मालिक प्रकाशित करने से इनकार करता है, और संपादक को फोन करके रिपोर्टर माधवी शर्मा को नौकरी से निकाल देने को कहता है।

समाचार चैनल (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)

अभी तक हमने समाचार–पत्र में बढ़ती स्वामित्व के बढ़ते वर्चस्व को उपर्युक्त बातों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। यही समाचार चैनल (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) का हाल है? इसे फिल्म 'मिशन इस्तानबुल' और 'रण' के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास करेंगे। सर्वप्रथम हम फिल्म 'मिशन इस्तांबुल' में दिखाए गए मीडिया के स्वामित्व के बारे में जानने का प्रयास करते हैं, फिल्म में विकास सागर (जायद खान) नामक आजतक चैनल का समाचार वाचक (न्यूज रीडर) है, तथा उसे इस्तांबुल में प्रशिक्षण हेतु तीन महीने के लिए बुलाया जाता है। यह चैनल इस्तांबुल का अलजज़ीरा चैनल है, यह मुख्यतः अरबी भाषायी है, जिसका मालिक गज़नी नामक व्यक्ति है। वह इस चैनल का उपयोग मुख्य रूप से आतंकवादी संदेश का प्रसार करने के लिए करता है। इस फिल्म में मालिक के स्वामित्व के बारे में निर्देशक ने बखूबी से प्रस्तुतिकरण किया है कि आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का इस्तेमाल निजी

स्वामित्व में चलने वाले चैनलों के मालिक किस हदतक इस माध्यम का उपयोग करते हैं, यह इस फिल्म द्वारा दर्शाया गया है। फिल्म में फ्लोर नंबर 13 को बहुत ही गुप्त एवं महत्वपूर्ण दिखाया गया है और पूरी फिल्म इसी के इर्द–गर्द बुनी गई है। इसमें विकास सागर गलती से जब लिफ्ट से फ्लोर नंबर 13 पर जाता है, तब उसकी पिटाई सुरक्षा अधिकारी के द्वारा की जाती है, क्योंकि वहां जाना किसी भी संवाददाता समाचारवाचक को मना है। अतः फिल्म 'मिशन इस्तांबुल' में समाचार चैनल के ऊपर भी समाचार चैनल के मालिक का पूर्ण अधिकार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, और चैनल के द्वारा आतंकवादी संदेशों को प्रसारित करते हुए दिखाया गया है।

इसी प्रकार रामगोपाल वर्मा द्वारा निर्देशित फिल्म 'रण' में दो धाराओं के चैनलों का प्रस्तुतिकरण किया गया है, जिसमें विजय हर्षवर्धन मलिक (अमिताभ बच्चन) समाचार चैनल को जनता की सेवा करने वाला एक माध्यम मानते है जो कि पत्रकारिता के मूलसिद्धांतों से अपने समाचार चैनल '24 हॉवर्स इंडिया टीवी' को चला रहे हैं तो दूसरी ओर अम्ब्रीश कक्कर जो विजय मलिक के यहां काम करनेवाला एक रिपोर्टर है। जिसने 'हेडलाइन 24 हॉवर्स' चैनल शुरू किया है और इसके लिए उसकी रणनीति सिर्फ टीवी की खबरों को विशुद्ध रूप से एक व्यवसाय के तौर पर दिखाया है। उसके लिए किसी भी मूल्य या सरोकर की कोई अहमियत नहीं है। उसका एक ही उद्देश्य है और वह यह कि कैसे अधिक से अधिक मुनाफा कमाया जाए। इसके लिए वह हर हथकंडे अपनाता है। एक–एक खबर की कीमत वसूलने में लगा है। यहां तक कि पैसे मिलने पर विजय हर्षवर्धन के दामाद को दानवीर कर्ण के रूप में अपने चैनल में प्रस्तुत करता है। इसका एक ही लक्ष्य है कि कैसे चैनल को अच्छी टी.आर.पी. हासिल हो। इसके लिए वह क्राइम को महिमा मंडित कर दिखाता है तो, अंधविश्वास के छप्पनभोग परोस देता है। इसे प्रस्तुत फिल्म में राजनेता मोहन पांडे (परेश रावल) के काली करतूतों की रिपोर्टिंग कर पूरब शास्त्री (रितेश देशमुख) अम्ब्रीश कक्कर को वह रिपोर्टर अपने चैनल पर दिखाने के लिए देता है, परंतु अम्ब्रीश कक्कर, मोहन पांडे से 500 करोड़ रूपए लेकर उस सत्य रिपोर्ट के बजाए मोहन पांडे की छवि अपने चैनल पर एक महान राजनेता के रूप में पेश करता है।

प्रिंट मीडिया

प्रिंटमीडिया के बारे में चर्चा की जाए तो मधुर भंडारकर की फिल्म 'पेजथ्री' द्वारा बदले हुए प्रिंटमीडिया के मूल्य को देख सकते हैं। इस फिल्म की शुरुआत में ही प्रवासी भारतीय हिरेन संघवी जो अभी–अभी अमेरिका से लौटा है, और अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए उसने महिला जनसंपर्ककर्ता को अपने घर बुलाकर व्यवसाय को प्रतिष्ठा प्रदान करने हेतु सुझाव मांगता है, तो महिला जनसंपर्ककर्ता उसे सुझाव देती है कि आपकी खबर पेजथ्री पृष्ठ पर आते ही आप एक प्रतिष्ठित व्यापारी के रूप में प्रसिद्ध हो जाएंगे। उसी समय हिरेन संघवी महिला जनसंपर्ककर्ता को सवाल करता है कि यह पेजथ्री होता क्या है? तब महिला जनसंपर्ककर्ता पेजथ्री के बारे में बताती है कि पेजथ्री समाचार–पत्र का एक ऐसा पृष्ठ है, जिस पर अभिजातवर्ग के समाचार छपते हैं। पाठक समाचार–पत्र भले ही ना पड़े लेकिन पेजथ्री पृष्ठ जरूर पढ़ते हैं। अतः हिरेन संघवी और एक सवाल पूछता है कि मेरे व्यापार का तो कोई समाचार नहीं है और ना तो यहां लोग मुझे पहचानते हैं? महिला जनसंपर्ककर्ता कहती है 'खबर होती नहीं है, खबर बनाई जाती है'. इस तरह फिल्म में माधुरी शर्मा नामक रिपोर्ट 'नेशन टुडे' समाचार–पत्र में कार्यरत है, और पेजथ्री पृष्ठ के संभान में है। फिल्म में समाचार–पत्र को अच्छी उपलब्धि मिलने के बाद समाचार–पत्र के मालिक अमीर चंदानी पेजथ्री को बढ़ाने का निर्णय लेता है। यह खुश खबर संपादक पेजथ्री संभान की रिपोर्टर माधवी शर्मा को देता है। तब माधवी शर्मा संपादक दीपक सुरी से कहती है, सर आप पेजथ्री पृष्ठ को बढ़ा रहे है, लेकिन इन पृष्ठों के लिए खबरें कहां से आयेंगी? संपादक कहता है कि खबरें नहीं है तो बनाओं (Makes creative news) यह सुनकर माधवी आश्चर्यचकित होती है। इस फिल्म में एक ओर निर्देशक ने रिपोर्टर द्वारा कहे एक वाक्य से भारतीय मीडिया की छवि को दिखाने का प्रयास किया है, जिसमें 'नेशनटुडे' समाचार–पत्र में कार्यरत क्राइम रिपोर्टर विनाय कमाने, इंस्पेक्टर भोसले को चरस बेचने की जानकारी देता है, इंस्पेक्टर भोसले आरोपी को पकड़कर पुलिस थाने गाड़ी से ले जा रही होती है तभी पुलिस इंस्पेक्टर आरोपी को गाड़ी से बाहर फेंक देता है और आरोपी की मौत हो जाती है। विनाय कमाने यह सब जानते हुए भी कहता है 'खबर तो पूरी छपेगी सिवाय इस हिस्से को छोड़कर'।

इस उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि आज रिपोर्टरों की भूमिका भी संदिग्ध नजर आती है। जैसे संपादक दीपक सूरी द्वारा माधवी को कहना कि खबरें नहीं है तो बनाओ यह दर्शाता है कि समाचार–पत्र बेचने की इस होड़ में खबरों का निर्माण किस तरह से तोड़–मरोड़ कर किया जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

इन दो दशकों में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सूचना और संचार का सबसे गतिशील माध्यम बनकर उभरा है। इन चैनलों पर 24X7 हर समय समाचार प्रसारित होते रहते हैं। अतः समाचारों की निरंतरता बनाए रखने के लिए समाचार चैनलों के मालिक टी.आर.पी. के इस गलाकाट स्पर्धा में खबरों की गढ़न अपनी इच्छा अनुसार कर रहे हैं। कई समाचार चैनल अपने संदेशों को प्रसारित करने के लिए इस माध्यम का उपयोग करते हैं। इसे हम अपूर्व लाखिया द्वारा निर्देशित फिल्म 'मिशन इस्तानबुल' एवं रामगोपाल वर्मा द्वारा निर्देशित फिल्म 'रण' इन फिल्मों में इसका प्रस्तुतिकरण किया गया है। फिल्म 'मिशन इस्तानबुल' में अलजज़ीरा समाचार चैनल है। यह फिल्म पूर्णतः उन समाचार चैनलों का प्रतिनिधित्व करती है, समाचारों से संबंधित विचारों के प्रति अपने संदेशों का निर्वाह करते हैं। यह चैनल अरबी भाषा का है। इस चैनल की खासियत यह है कि आतंकवादी गिरोहों के समाचार सबसे पहले इसी चैनल पर आते हैं। दुनिया के किसी भी समाचार चैनल को न मिल कर सिर्फ इस चैनल को मिलने का क्या कारण है? इसे निर्देशक ने फिल्म में बड़े अच्छे से प्रस्तुतिकरण किया है। फिल्म के आरंभ में विकास सागर अफगानिस्तान जाकर आतंकवादी संगठन के खलील नामक व्यक्ति का साक्षात्कार लेता है, वह भारत की सबसे पहली आतंकवादी समाचार होता है। अतः विकास सागर इस्तांबुल में तीन महीने के प्रशिक्षण के लिए अलजजीरा समाचार चैनल में जाता है। वह वहां चैनल के सहकर्मीओ, एस. हुसैन के साथ फिर से खलील नामक आतंकवादी का साक्षात्कार लेने जाता है। बाद में वह आतंकवादी समाचार चैनल के मालिक गजनी का अच्छा दोस्त दिखाया है। इससे हम देख सकते हैं कि समाचार चैनल के मालिक एक दूसरे के साथ मिलकर अपने संदेश का प्रसारण चैनल के माध्यम द्वारा करते हैं। इसी तरह फिल्म में फ्लोरनंबर 13 पर जो खबरें नहीं होती उन्हें बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। कैसे एक समाचार चैनल का स्वामी एक आतंकवादी होता है और अपने चैनल में ही खबरें बनाकर जनता के सामने परोस रहा है। इसे निर्देशक द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय हिंदी फिल्मों में मीडिया

खबरों की बनावट ग्राफिक्स के आधार पर–कुछ समय तक यह कहा जाता था कि बड़े घरानों द्वारा प्रकाशित पत्र ही आकर्षक रूप में छप सकते हैं। आज इस बात का कोई भी औचित्य नहीं है। पहले टीवी समाचार सीमित जानकारियां देती थी, क्योंकि उसमें ना तो आज की तरह समझ थी, ना जरूरत महसूस की जाती थी और ना ही इसके लिए पर्याप्त साधन होते थे, मगर टेक्नोलॉजी के माध्यम से टीवी न्यूज़ में जो महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, उनमें ग्राफिक्स का बड़ा योगदान है। जिससे नया जानने या देखने के अभ्यस्थ या जिज्ञासु दर्शकों को बनाए रखने में मदद मिलती है। इसका बखूबी चित्रण प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में शोध आलेख के फिल्मों द्वारा देखा जा सकता है।

फिल्म पेजथ्री में मधुर भंडारकर ने उन पहलुओं को दिखाने का प्रयास किया है, जिनसे जनता अभिमुख नहीं है। मुख्यतः इस फिल्म में अभिजातवर्ग द्वारा आयोजित पार्टियों के आयोजन पर केन्द्रित है एवं इन पार्टियों में शामिल होने वाले हर एक लोग अभिजातवर्ग के हैं, अतः इन लोगों के फोटो खींचकर उसे ग्राफिक्स की मदद से सुशोभित कर पेपर में प्रकाशित करने से लोगों पर इसका गहरा असर पड़ता है, किसी ने ठीक ही कहा है कि एक फोटो एक हजार शब्दों के बराबर होता है। ठीक उसी तरह एन. आर. आई. हिरेन संघवी जो अभी–अभी भारत आया है और वह पेजथ्री पार्टी का आयोजनकर अपने फोटो खिंचवाकर तकनीक एवं ग्राफिक्स की मदद से समाचार–पत्रों द्वारा शहर में व्यापार को बढ़ाना चाहता है। यह तो प्रिंटमीडिया की आज की दिनचर्या हो गई है।

इसी तरह ग्राफिक्स का इस्तेमाल फिल्म 'मिशन इस्तांबुल' एवं फिल्म 'रण' में भी देख सकते हैं। फिल्म 'मिशन इस्तांबुल' की शुरुआत ही ब्रेकिंग न्यूज़ और एक्सक्लूजिव न्यूज़ द्वारा आतंकवादी गिरोहों को दिखाया गया है।

गजनी जो समाचार चैनल का मालिक है। उससे विकास सागर को मिलवाता है एवं फ्लोरनंबर 13 के बारे में बताता है कि वहां जाना किसी भी रिपोर्टर को मना है वहां सिर्फ जिस आदमी के पास पासवर्ड है वही जा सकता है। अतः विकास सागर, ओ. एस. हुसैन के मौत के बाद शमशान में श्रद्धांजलि देते समय रिजवान खान उसे एक पर्ची में संदेश देता है कि तुम्हारी जान को खतरा है, यह सोचते हुए विकास सागर फ्लोरनंबर 13 पर चला जाता है, जहां चीफगार्ड जहीर उसे पीटता है। यहीं से कहानी आगे बढ़ते हुए रिजवान खान और विकास सागर फ्लोर नंबर 13 पर जाकर पेन ड्राइव में सारा डाटा ले लेता है। वहां एक अजीब बात देखने को मिलती है कि किसतरह से नई तकनीक का इस्तेमाल कर किसी का चेहरा, शरीर, स्थान और आवाज बदली जा सकती है। यह सब अबू नाजिर को दुनिया को ज़िंदा दिखाते हैं, जो कि मरकर भी मरा नहीं लेकिन उसका नाम और काम अभी भी दुनिया में उस संगठन के लोग इस्तेमाल कर रहे हैं। इस बात का पर्दाफाश उस समय होता है जब विकास सागर सर्वर से सारी जानकारी पेनड्राइव में लेता है।

विजय हर्षवर्धन मलिक का बेटा जय मलिक है और दामाद नवीन शंकर है। यह मोहन पांडे जो जनसेवा राजनीति पार्टी का अध्यक्ष है और वह देश के वर्तमान प्रधानमंत्री के बम विस्फोट में शामिल है, ऐसा दिखाने के लिए एक षड्यंत्र रचता है। जिसमें हर्षवर्धन मलिक के दामाद को एक बड़ा उद्योगपति बनाने की लालच देकर वह उसे अपने इस षड्यंत्र में शामिल करता है तो जय मलिक को यह समझाता है कि तुम्हारे समाचार चैनल द्वारा प्रधानमंत्री दिग्विजय हुड्डा के बारे में लोगों को ऐसा संदेश दो कि वह बम विस्फोट में शामिल है ऐसा साबित होना चाहिए। इससे तुम्हारे चैनल को अच्छी खबर मिलेगी जिससे तुम्हारे चैनल के दर्शकों की संख्या बढ़ जाएगी पैसा भी मिलेगा। इस झांसे में आकर जय मालिक, एक ऐसा समाचार कैसेट बनाता है जिसमें प्रधानमंत्री ने ही बम विस्फोट करवाया है, ऐसा यकीन इंडियाटीवी 24X7 के स्वामी विजय हर्षवर्धन मलिक द्वारा समाचार प्रस्तुतकर दर्शकों को दिखाया जाता है। अतः उपर्युक्त उदाहरण द्वारा स्पष्ट होता है कि विभिन्न निर्देशकों ने अपने–अपने फिल्म द्वारा मीडिया में हो रहे ग्राफिक्स और तकनीक का हो रहे गलत इस्तेमाल को कितने सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

निर्देशकों द्वारा समसामयिक घटनाओं को आधार बनाकर फिल्म निर्माण की प्रक्रिया पूरी की गई है, जिसे प्रस्तुत शोध–प्रपत्र में विश्लेषणात्मक अध्ययन के द्वारा दिखाया गया है। इससे कुछ प्रश्न उभरकर सामने आए हैं कि पत्रकार अपने कार्य के प्रति कितने ईमानदार, निष्ठावान एवं सजग होते हैं, वास्तविकता क्या है? क्या आज के पत्रकार गलाकाट स्पर्धा के युग में अपने दायित्व को समझ पा रहे हैं? मीडिया के बदलते चरित्र में बाजार जनित स्पर्धा और टेक्नोलॉजी ने कैसे खबरों की चालको परिवर्तित कर मीडिया अपना घालमेल उद्योगपतियों, राजनेताओं तथा आतंकवादी संगठनों के साथ कर रहा है। यह उक्त फिल्म द्वारा स्पष्ट होता है। मीडिया के इस बदलते हुए स्वरूप ने उसके मर्यादा को भारी नुकसान पहुंचाया है। न्यूज़ चैनल पत्रकारिता के मूल उद्देश्य से भटके हैं। संभव है कि इस आलोचना में सत्यता हो। मगर इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि न्यूज़ चैनल अभी खुद सीखने के दौर से गुजर रहे हैं। वे प्रयोग कर रहे हैं और प्रयोग में गलतियां भी होती है। हो सकता है कि इन गलतियों से सबक लें और मौजूदा संकट से नए मीडिया का उदय हो। आखिरकार दर्शकों की मर्जी के खिलाफ कौन–सा चैनल चल सकता है। इसलिए मीडिया से जिम्मेदारी की मांग करते वक्त यह भी देखा जाना जरूरी है कि उसका दर्शक–समाज कैसा है। वह क्या चाहता है?

संदर्भ सूची

पुस्तकें

1. अग्रवाल, प्रहलाद. (2007). *बाजार के बाजीगर.* राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली।
2. ओझा, अनुपम. (2007). *भारतीय सिने सिद्धांत.* राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली।
3. ब्रह्मात्मज, अजय. (2014). *सिनेमा की सोच.* वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली।

4. दिलचस्प. (2013). *हिन्दी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास.* सामयिक प्रकाशन, नईदिल्ली।

Film

5. Page 3. Dir. Madhur Bhandarkar. Konkona Sen Sharma, Atul Kulkarni and Boman Irani. Percept Picture Company. 2005. DVD.
6. Mission Istaanbul. Apoorva Lakhia. Vivek Oberoi, Zayed Khan, Shriya Saran. 2008. Balaji Telefilms. 2008. DVD.
7. Rann. Dir. Ram Gopal Varma. Amitabh Bachchan, Riteish Deshmukh, Gul Panag. 2010. Cinergy Pictures. 2010. DVD.

****